Dainik Bhaskar (Indore), 11th April 2016, Page – 07

सरोकार

आईआईटी छात्रों ने महिलाओं को धुआं रहित चूल्हा बनाने की ट्रेनिंग भी दी, 160 घरों को मिला लाभ

सिमरोल के नयागांव के घरों को किया चूल्हे के धुएं से मुक्त

भास्कर संवाददाता | इंदौर

आईआईटी इंदौर के स्टूडेंट सामाजिक जिम्मेदारी भी बखूबी निभा रहे हैं। थर्ड ईयर के छात्रों ने सिमरोल स्थित नए कैंपस के पास बसे नयागांव के हर घर को धुएं वाले चूल्हे से मुक्ति दिलवा दी। छात्रों ने महिलाओं को चिमनी वाला चूल्हा बनाने की ट्रेनिंग दी। फिर छह माह में हर घर में ऐसे चूल्हे तैयार करवाए। आज नयागांव की महिलाएं ये चूल्हे बनाकर बेच भी रही हैं, जो उनकी आय का साधन बन गया है। छात्रों ने सात माह से ज्यादा प्रोजेक्ट पर काम किया। अब गांव के 160 में से 150 घरों में इन्हीं चूल्हों का उपयोग हो रहा है। कुछ घरों में पहले से ही रसोई गैस या स्टोव का उपयोग हो रहा था।

पहले धुएं के नुकसान बताए फिर चिमनी युक्त चूल्हे के फायदे

दरअसल, सितंबर में छात्रों ने ग्रामीणों से चर्चा की थी। उन्होंने पहले धुएं के नुकसान बताए। खासकर बच्चों पर पड़ रहे बुरे प्रभाव की जानकारी दी। तब कुछ ही घरों में रसोई गैस और स्टोव का इस्तेमाल होता था। ज्यादातर लोग यह खरीदने और हर माह इसका खर्चा उठाने में सक्षम नहीं थे। वे जंगल से लकड़ियां लाकर चूल्हा जलाकर खाना बनाते थे।

सबसे ज्यादा थी बच्चों को परेशानी

गांव के श्यामू बताते हैं कि धुएं वाले चूल्हे से बच्चों को अधिक परेशानी होती थी। छात्रों की मदद से हमारे यहां अब चिमनी वाला चूल्हा जलता है। न धुआं होता है न ज्यादा लकड़ी लगती है। हम इसे बनाकर बेच भी रहे हैं। रमाबाई बताती हैं कि कुछ छात्रों ने सबको चूल्हा बनाना सिखाया। आज हर घर में धुएं की परेशानी खत्म हो चुकी है।

हर चूल्हे पर 200 रुपए कमाई

इस चूल्हे को तैयार करने की लागत 450 रुपए है, जबकि इसे 650 रुपए में बेचा जाता है। इसकी खासियत है कि इस पर चिमनी लगी होती है जिससे धुआं घर से बाहर चला जाता है। इसमें ईंधन भी एक तिहाई लगता है। इसे बनाने की प्रक्रिया भी आसान है।